: द्वितीय अध्याय :

समाज जीवन : परिभाषा, स्वरुप, एवं विशेषताएँ

द्वितीय अध्याय

समाज जीवन : परिभाषा, स्वरूप एवं विशेषताएँ

प्रस्तावना

2.1 समाज : अर्थ एवं परिभाषा ।

2.2 समाज : स्वरूप ।

2.3 समाज : महत्त्व ।

2.4 समाज : वर्गीकरण ।

2.4.1 उच्च वर्ग।

2.4.2 मध्य वर्ग।

2.4.3 निम्न वर्ग।

2.5 समाज : परिस्थितियाँ एवं समस्याएँ ।

2.5.1 राजनीतिक परिस्थिति ।

2.5.1.2 राजनीतिक समस्या ।

2.5.2 सामाजिक परिस्थिति ।

2.5.2.1 सामाजिक समस्या ।

2.5.3 आर्थिक परिस्थिति ।

2.5.3.1 आर्थिक समस्या ।

2.5.4 धार्मिक परिस्थिति ।

2.5.4.1 धार्मिक समस्या ।

2.5.5 सांस्कृतिक परिस्थिति।

2.5.5.1 सांस्कृतिक समस्या ।

2.6 समाज जीवन की विशेषताएँ ।

2.6.1 संयुक्त परिवार ।

2.6.2 देशप्रेमी समाज ।

2.6.3 संस्कृतिप्रिय समाज ।

2.6.4 विद्रोही समाज ।

2.6.5 आत्मनिर्भर साहसी नारी ।

2.6.6 महत्त्वाकांक्षी युवावर्ग ।

2.6.7 समलिंगी आकर्षण ।

2.6.8 कलाप्रिय वात्सल्यमयी वेश्या ।

निष्कर्ष

2.1 समाज अर्थ एवं परिभाषाएँ :-

प्रस्तावना :-

अंग्रेजी में समाज को 'Society' कहा जाता है। 'Society' का मतलब है The group of some people - मनुष्य आपसी सहचर्य से मिल-जुलकर जीवन के अंतिम क्षण तक समाज से संबंधित रहता है। इसीलिए हमे समाज का अर्थ जानना आवश्यक है। समाज का समाजशास्त्रीय दृष्टि से एक विशेष अर्थ होता है। जिसके बगैर हम समाज को समझ नहीं सकते। समाजशास्त्रज्ञ तथा विद्वानों ने समाज के जो अर्थ दिए हैं वे निम्न प्रकार से हैं -

समाज : अर्थ :-

1. मानक हिंदी कोश :-

"समाज पु. सं.

1. बहुत से लोगों का गिरोह या झुंड़ । समूह जैसे सत्संग समाज ।
2. एक जगह रहनेवाले अन्यथा एक ही प्रकार का काम करनेवाला लोगों का दल वर्ग या समूह / समुदाय ।
3. किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की हुई सभा जैसे - आर्य समाज, संगीत समाज ।
4. किसी प्रदेश या भूखंड़ में रहनेवाले लोग जिनमें सांस्कृतिक एकता होती हैं।
5. किसी संप्रदाय के लोगों का समुदाय जैसे अग्रवाल समाज"[1]

2. नालंदा विशाल शब्द सागर :-

समाज : संज्ञा पु : (सं)

1. समूह, गिरोह।
2. एक स्थान पर रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का कार्य करनेवाले लोगों का वर्ग, दल या समूह / समुदाय ।
3. विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित हुई सभा सोसायटी" ।[2]

आधुनिक समाजशास्त्रियों ने समाज शब्द का व्यापक अर्थ - विस्तृत मानवता या मानव जाति तथा मानव संग्राम के प्रामाणिक आधार के रूप में स्पष्ट किया है।

यहाँ विभिन्न विद्वान और समाजशास्त्रियों ने समाज के लिए समूह, दल, गिरोह, सभा, झुंड़ आदि शब्दार्थ प्रयुक्त किए हैं। ये अर्थ कुछ सीमित हैं, लेकिन आज भिन्न जाति, धर्म, संस्कृति, रीति-रिवाजें परंपरा के लोग आपसी सहचर्य, विचारों की एकरूपता से मर्यादा तथा नियमों का पालन करके उसके अनुरूप अपना आचरण करते हैं, तो वह भी समाज कहलाता है। अत: व्यक्तियों का समूह केवल समाज नहीं, पर समूह में रहनेवाले व्यक्तियों के सामाजिक संबंधो को समाज कहते हैं।

समाज : परिभाषा :-

वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर समाज की तात्त्विक तथा विस्तृत परिभाषा ही सर्वमान्य और सर्व स्वीकृत हो सकती है। कोशकारों ने उपर्युक्त तरिके से समाज को परिभाषित करने का प्रयत्न किया है। फिर भी मनुष्य विकसनशील प्राणी है और समय के अनुसार परिस्थितियाँ, परिवेश पहले जैसे न रहकर कुछ मात्रा में उनमें बदल हुआ दिखाई देता है। परिणामत: समाज के कोशगत अर्थों में भिन्नता दिखाई देती है। विद्वानों ने समाज की, निम्नलिखित प्रकार से परिभाषाएँ दी हैं -

1. **सी.पी.भटनागर :-**

"भावुकतापूर्ण सुखापन और आपसी सहचर्य की दृष्टि ही समाज हैं"।[3]

2. **डॉ.विमल शंकर :-**

'समाज सामाजिक संबंधों का पार्श्व हैं' इस परिभाषा को स्पष्ट करते हुए वे आगे कहते हैं' - "मनुष्य की पारस्पारिक क्रियाएँ, अंतक्रिया एवं प्रतिक्रिया वही समाज का निर्माण एवं विकास करती है, इनके माध्यम से ही समाज की पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को उसके कल्याण के लिए अपने अनुभव हस्तांतरित करती है।"[4]

3. **पु.ल.भांडारकर, प्रा.नी.स.वैद्य :-**

"सामाजिक संस्थाओं के आपसी संबंधों से बनी व्यवस्था ही समाज है।"[5]

उपर्युक्त विद्वानों ने समाज का अर्थ समूह, झुंड़ तथा एक ही प्रकार के काम करनेवाले लोग, समूह, गिरोह, एक स्थान पर रहनेवाले, एक ही कार्य करनेवाले मनुष्यों का वर्ग, दल इस तरह प्रस्तुत किया है। डॉ.भटनागर जी आपसी सहचर्य को समाज का महत्त्वपूर्ण पक्ष मानते हैं। तो डॉ.विमल शंकर जी सामाजिक संबंधों को महत्त्वपूर्ण मानते हैं जिससे समाज बनता है। भांडारकर , प्रा.वैद्य सामाजिक संस्थाओं की व्यवस्था को महत्त्व देते हैं क्योंकि, उससे ही समाज बनता है।

उपर्युक्त अर्थ तथा परिभाषाओं के स्पष्टीकरण से यह कहा जा सकता है कि, समाज केवल व्यक्तियों का समूह नहीं है, बल्कि अपने आस पास के रहनेवालों के प्रति संबंध का साधारण नाम ही समाज है। सामाजिक संस्था इस संबंध को दृढ़ बनाती है। अत: हम यहाँ समाज को इस तरह परिभाषित करते हैं -

"सामाजिक संस्था से निर्मित व्यक्ति समुहों के आपसी संबंध तथा सामाजिक संबंधों की उद्देश्यनिहित बुनावट ही समाज है।"

2.2 समाज : स्वरूप :-

मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण वह किसी वर्ग से, समूह से संबंधित रहता है। इसी तरह अनेक व्यक्ति इकठ्ठा होते हैं और समाज का क्षेत्र व्यापक बनता है। व्यक्ति समाज की इकाई है, इसी कारण वह समाज की बुनियाद है। समृद्ध समाज में व्यक्ति पर वंश-परंपरा, धर्म, संस्कृति, जाति, कला, रीति-रिवाजों

का प्रभाव पड़ता है। जिससे मनुष्य परिपूर्ण बनता है और समाज निर्मित नियम, मर्यादा, संस्कृति के अनुसार अपना आचरण करता है।

विश्व में कई प्रकार के समाज है। प्रत्येक समाज की जीवनशैली भिन्न होती है। इन समूहों की भिन्नता का मतलब, उनकी वैशिष्ट्यपूर्ण जीवन पद्धति है। जिससे समाज का स्वरूप स्पष्ट होता है। परिवर्तन की प्रक्रिया के साथ ही समाज का स्वरूप बदलता रहता है।

मनुष्य के केवल एक साथ रहने से समाज नहीं बनता। बल्कि विशिष्ट भौगोलिक स्थान पर आपसी सहचर्य से मनुष्य में जो संबंध बनते हैं वे समाज के द्योतक हैं। आज विशिष्ट भौगोलिक स्थान में गाँव, शहर, महानगर में रहनेवाले लोगों के समूह का समावेश किया गया है। इस से ही विशाल समाज बनता है।

हर समाज की संस्कृति, नियम, मर्यादाएँ होती हैं। इनमें संस्कृति को जादा महत्त्व दिया गया है, जो एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाती है। इसीलिए संस्कृति समाज की जननी है। हर समूह की जीवन जीने की विशिष्ट पद्धति संस्कृति के अंतर्गत आती है। जैसे रीति-रिवाज, आचार-विचार, रूढ़ि, परंपराएँ, प्रथाएँ और इससे ही देश का समाज स्वयंपूर्ण बनता है। डॉ.मंजुला गुप्ता लिखती हैं -

" व्यक्ति स्वयं अपने विचारों, मान्यताओं, आदर्शों और रीतियों द्वारा समाज व्यवस्था का नियमन करता है। लेकिन परिवर्तन की प्रक्रिया में एक समय में बने हुए नियम आनेवाले समय में रूढ़ि सिद्ध हो जाते हैं और परिस्थितिनुरूप मान्यताओं, रीतियों, नीतियों को बनाता है।"[6] इस तरह मनुष्य संस्कृति बनाता है, इस बदलते समाज स्वरूप में मनुष्य अपना जीवन बिताता है।

समाज में राजकीय शासन व्यवस्था अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इसी शासन व्यवस्था में कानून तथा न्याय व्यवस्था व्यक्ति को नियंत्रित करती है। प्राचीन काल से ही आर्थिक व्यवस्था समाज को धनार्जन कराके व्यक्ति के उदरनिर्वाह का मार्ग बनी है। विषम अर्थव्यवस्था के कारण कुछ लोग गरीब हैं, तो कुछ लोग अमीर हैं, तो कुछ शिक्षित, कुछ अशिक्षित हैं। इस तरह अर्थ के आधार पर समाज को विभाजित किया गया है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति समाज की इकाई बनकर संस्कृति के नुसार धर्म का आदर कर, मर्यादाओं का, नियमों का पालन करता हैं। साथ ही समाज में स्थित विवाह संस्था, परिवार संस्था, राज्य संस्था आदि अनेक छोटी-मोटी संस्थाएँ समाज की आवश्यकताएँ पूर्ण करती हैं, जिससे सामाजिक व्यवस्था बनती है। अत: सामाजिक संबंध बनते हैं और इन्हीं संबंधों में समाज का स्वरूप दिखाई देता है।

2.3 समाज : महत्त्व :-

समाज मनुष्य का विकास करता है। इसी कारण मनुष्य जीवन में समाज को अति महत्त्व है। मनुष्य शरीर की मूल प्रवृत्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति समाज करता है। मनुष्य की मूल प्रवृत्ति काम है और विवाह

संस्था के जरिए इस आवश्यक मूल प्रवृत्ति की पूर्ति होती है, जिससे मनुष्य का वंश आगे चलता है। मनुष्य के मानसिक विकास के लिए शांती, समाधान सुख की आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता की पूर्ति धार्मिक संस्था पूरी करती हुई दिखाई देती है जैसे पूजा-पाठ प्रार्थना, मंदिर का महत्त्व आदि, धर्म ही व्यक्ति को सीखाता है। परिवार संस्था, मनुष्य का प्रथमावस्था में पालन-पोषण कर उस पर योग्य संस्कार करके उसके मन को पवित्र बनाती है। जिसके कारण वह नि:स्वार्थता से हर व्यक्ति की मदत करके सामाजिक संबंधों को दृढ़ बनाता है।

समाज में अर्थसंस्था के कारण मनुष्य धन अर्जित कर सकता है। इस बारे में डॉ.मंजुला गुप्ता लिखती है - "धन के आधार पर व्यक्ति की प्रतिष्ठा और सामाजिक स्थिति जानी जाती है।"[7] इस तरह प्रतिष्ठा प्रिय व्यक्ति को समाज अर्थ व्यवस्था के जरिए धन उपलब्ध करा देता है। इन सामुहिक व्यवस्था के कारण ही मनुष्य अपने अस्तित्त्व की रक्षा समाज में करता है। अत: इस व्यवस्था के जरिए शिक्षा संस्था में व्यक्ति शिक्षित होकर समाज में आदर्श व्यक्ति बनकर आदर का स्थान पाता है। राज्य व्यवस्था में संविधान के जरिए कानून, न्याय की व्यवस्था कर अपराधी व्यक्ति को सजा देकर अपराध पर नियंत्रण रख पाता है। धर्म से मनुष्य अपना कर्तव्य, त्याग, तप, कर्म, प्रेम आदि का महत्त्व जानकर उनके अनुसार आचरण करने का प्रयत्न करता है। संस्कृति समाज का इतिहास है। इसी वजह से व्यक्ति सांस्कृतिक विशेषता को जानकर अपना कार्य करता है, और वर्तमान सुखद रूप में व्यतीत करने की, कामना रखता है - जैसे प्रथमावस्था में परिवार, पड़ोसी, स्कूल आदि में अपना कार्य कर उन व्यक्तियों का अनुकरण करता है। इस से ही परस्पर सहकार्य, आपसी सहचर्य की भावना व्यक्ति में निर्माण होती है। इस प्रकार समाज अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है, जिससे मनुष्य अपने उद्देश्यों की पूर्ति करता है। समाज भी व्यक्ति की भिन्न- भिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति कर उसे उन्नति का मार्ग दिखाता है। समाज व्यक्ति के पथदर्शक के रूप में मदद करके उसके लिए उन्नति के अनेक अवसर प्रदान करता है।

समाज मनुष्य का बौद्धिक विकास करता है। जिससे मनुष्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आये उचित ज्ञान संस्कृति, प्रथा-परंपरा का योग्य उपयोग कर अपना जीवन सुखी बनाता है। इस तरह समाज मनुष्य जीवन में अपना विशेष महत्त्व रखता है।

2.4 **समाज : वर्गीकरण :-**

मनुष्य के वर्ग संगठन से ही समाज बनता है। व्यक्ति रोटी, कपड़ा, मकान आदि मुलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वर्ग से संबंधित रहता है। मनुष्य समूह में आर्थिक हितों की समानता होना ही वर्ग हैं। समाज की प्रारंभिक अवस्था में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र आदि वर्गों का निर्माण गुण, कर्म के साथ जाति

के आधार पर हुआ है। अत: प्राचीन युग में मनुष्य की आवश्यकताएँ सीमित थी। लेकिन समाज में निरंतन चलते परिवर्तन से मनुष्य की आवश्यकताएँ व्यापक बनकर बढ़ती गई। इन वर्गों में संघर्ष बढ़ता गया जिससे शोषक और शोषित वर्ग का निर्माण हुआ। शोषक वर्ग उत्पादन के साधन-समूह को अपने हाथों में लेकर उस पर अपना अधिकार जताने लगा। परिणामत: मनुष्य जीवन में वर्ग संघर्ष की भावना बढ़ती गई, जिससे मनुष्य जीवन संघर्षमय बनता गया। समाज परिवर्तन तेजी से होकर वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक काल में धन को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। इसी तरह से धन के आधार पर ही कई समाजशास्त्रियों ने तथा विद्वानों ने समाज को विभाजित किया है - जैसे उच्चवर्ग, मध्यवर्ग, निम्नवर्ग।

कुछ विद्वानों ने समाज के इन तीन वर्गों को धन के साथ प्रतिष्ठा, शिक्षा, जाति, वंश की कसौटियों पर परखा हैं। इन तीनों वर्गो का उपविभाजन कर के नए उपवर्गों का निर्माण किया गया है।

2.4.1 उच्च वर्ग :-

उच्च वर्ग में कौन से लोग आ सकते हैं यह देखना आवश्यक हैं। प्रारंभिक समाज में स्थित उच्च वर्ग के बारे में डॉ.मंजुला गुप्ता लिखती हैं - "ब्राह्मण उच्च वर्ग के अधिकारी थे"।[8] अत: राजा, महाराजा, सेनापती, दरबारी लोग, महापंडित आदि लोग उच्चवर्ग का प्रतिनिधित्त्व करते आये हैं। लेकिन स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद पूँजिपति वर्ग ने औद्योगिक प्रगति की और वे समाज की अर्थव्यवस्था पर अधिकार जताने लगे। अत: बड़े व्यवसायी, व्यापारी, उद्योगपतियों के साथ सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च पद पर स्थित देश के शासकों का उच्च वर्ग में समावेश किया गया हैं। वर्तमान समाज में उच्चवर्ग ज्यादातर शोषक बनकर ही उभरा है। जिससे मध्यवर्ग और निम्नवर्ग अत्यंत त्रस्त हैं। उच्च वर्ग की विलासमयी जीवनशैली के लिए इन दो वर्गों को पीसना पड़ता हैं। अत: उच्चवर्ग में राष्ट्र के प्रधानमंत्री, सर्वोच्च अधिकारी, बड़े-बड़े उद्योगपति सम्मिलित हैं। इस उच्चवर्ग के दो उपविभाग है, जैसे उच्च-उच्चवर्ग, निम्न उच्चवर्ग। डॉ.वीणा गौतम इन दो वर्गों में आनेवाले व्यक्तियों को इस तरह हमारे सामने रखती हैं -

"उच्च-उच्चवर्ग में राष्ट्र के सर्वोच्च शासक अथवा अधिकारी तथा राजा, प्रधानमंत्री तथा सर्वाधिक धनी उद्योगपतियों को सम्मिलित किया जा सकता है। निम्न-उच्चवर्ग की प्रतिष्ठा और स्थिति लगभग उच्चवर्ग के समीप ही प्रतीत होती है। इसमें राष्ट्र के मंत्रियो, धनी उद्योगपतियों, राज्यों के राज्यपालों, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधिशों तथा वकिलों आदि को लिया जा सकता है।"[9]

इस तरह आज उच्चवर्ग में उपर्युक्त लोगों के अलावा और कई प्रकार के लोग आ सकते हैं। जिनकी आमदनी उपर्युक्त लोगों के समान है। आज इस उच्चवर्ग की संख्या सीमित है।

2.4.2 **मध्यवर्ग :-**

उच्चवर्ग तथा निम्नवर्ग के बीच के वर्ग को मध्यवर्ग नाम से जाना जाता है। इनके पास न ज्यादा धन होता है, न कम।आवश्यकता की पूर्ति के लिए आवश्यक धन उनके पास होता है। ज्यादातर बुद्धिजीवी इस वर्ग में शामिल हैं। भारत में अंग्रेजों ने क्लर्क का निर्माण करके मध्यवर्ग का निर्माण किया जो उनके राजकाज सँभालता था। लेकिन इस वर्ग का विकास स्वतंत्रता के बाद कई परिवर्तनशील परिस्थितियों का सामना कर तथा दो महायुद्धों के बाद हुआ है। स्वतंत्रता के बाद राजकीय मोहभंग की स्थिति के कारण मध्यवर्ग निराशा, घुटन, संत्रास में जीता आया है, जो आत्मनिर्भर भी हैं। यह वर्ग उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपनी बुद्धि का उपयोग करके नए-नए अविष्कार करने में सफल हुआ है। देश के बड़े-बड़े वैज्ञानिक कलाकार मध्यवर्ग से ही संबंधित हैं। बाद में इन में से कुछ उच्चवर्ग में शामिल हुए हैं। मध्यवर्ग के उच्च-मध्यवर्ग तथा निम्न-मध्यवर्ग ये दो उपवर्ग कुछ विद्वानों ने बनाएँ हैं। तो कुछ विद्वानों ने मध्य-मध्यवर्ग को मध्यवर्ग का और एक उपवर्ग स्वीकृत किया है। कुछ विद्वान मध्यवर्ग में आए लोगों को इस तरह वर्गीकृत करते हैं -

उच्च-मध्यवर्ग - में उच्च न्यायालयों के बड़े न्यायाधिश उच्च व्यावसायिओं के मालिक प्रबंधको, धनवान व्यापारी, बैंकों के मैनेजर, डॉक्टर, इंजिनिअर, निरीक्षकों, व्यवस्थापकों, प्रथम श्रेणी के पुलिस अधिकारी आदि लोग उच्च मध्यवर्ग का प्रतिनिधित्त्व करते हैं। पाश्चात्य संस्कृति इन्हें बहुत प्रिय होती हैं।

मध्य-मध्यवर्ग - इसमें प्राय: बुद्धिवादी लोग आते हैं, जो व्यक्तिवादी होते हैं। जो श्रम को महत्त्व देते हैं, अपनी बुद्धि के बल पर सामाजिक समस्याओं को परखने में सफल रहे हैं। अत: ज्यादातर बाबू लोग इस वर्ग मे शामिल हैं। द्वितीय श्रेणी के पुलिस अधिकारी भी इसमें शामिल है। तथा इस वर्ग पर अधिकतर पाश्चात्य प्रभाव दिखाई देता हैं। कुछ विद्वान इस वर्ग को स्वीकृति नहीं देते हैं।

निम्न मध्यवर्ग - में छोटे व्यापारी, बुद्धिवादी, वेतनभोगी कर्मचारी - पुलिस हवलदार, क्लर्क जैसे लोग देखे जाते हैं। यह वर्ग आर्थिक विषमता के कारण निरंतर पीसता रहा है। उच्च-मध्यवर्ग की तुलना में, निम्न मध्य वर्ग अधिक कष्ट करता हुआ दिखाई देता है।

इस तरह मध्यवर्ग के उपवर्ग किए गए हैं। मध्य वर्ग के लोग उच्चवर्गीय लोगों का अनुकरण करके उस वर्ग में प्रवेश पाने का प्रयत्न करते हैं। अत: इनमें से कुछ दहेज, भ्रष्टाचार और गलत तरिके से, धन इकठ्ठा करते हैं। मध्यवर्गियों को इज्जत से प्यार हैं और बदनामी से डर। कुछ मात्रा में ईश्वर के प्रति श्रद्धा इस वर्ग में दिखाई देती हैं। परिणामत: ये लोग उत्सव, पर्व, त्यौहार विवाह को बड़ी धूमधाम से मनाते हैं।

भारत में मध्यवर्ग प्रधान माना जाता है क्योंकि, यह वर्ग सुख-दुख के साथ लड़तें हुए अपना जीवन समय के परिवर्तन के नुसार बिताते हैं।

2.4.3 निम्नवर्ग :-

समाज में निम्नवर्ग शोषित के रूप में दिखाई देता है। प्राचीन समाज व्यवस्था में शोषित तथा शोषक दो ही वर्ग अस्तित्त्व में रहे हैं। लेकिन वर्तमानकाल में निम्नवर्ग ही शोषित-श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्त्व करता है तथा अर्थ सबका भगवान बन गया है। वही भगवान इस निम्नवर्ग के पास न होने के कारण वे गरीबी के अभिशाप में अपना कष्टमय जीवन गुजार रहे हैं। इस वर्ग के भी दो उपवर्ग है - उच्च निम्नवर्ग और निम्न निम्नवर्ग। इन दो वर्गों में निम्नलिखित लोगों का समावेश हैं।

उच्च-निम्नवर्ग में मासिक वेतन पानेवाले लोग आते हैं, क्योंकि वह इनके श्रम का मूल्य होता है। कुछ विद्वान ईमानदार, वेतनभोगी कर्मचारियों को इस वर्ग के सदस्य मानते हैं। मजदूर, चपराशी, कृषक, ठेकेदार के अधिकार क्षेत्र में काम करनेवाले, तथा डाक विभाग के रनर, ट्रक चालक आदि लोगों से उच्च निम्न वर्ग बनता है, जो दिनभर कड़ी मेहनत करते हैं। तथा कुछ लोग प्रतिदिन की मेहनत साँझ को मजदूरी में पाते हैं। यह वर्ग आर्थिक विपन्नता में अपना जीवन बीताता है। डॉ.अर्जुन चव्हाण जी लिखते हैं -"आर्थिक दौड़ में यह वर्ग उलझा हुआ है।" [10]

निम्न निम्नवर्ग अर्थाभाव के कारण उपेक्षित जीवन का सामना करता है। कुछ विद्वान उन वेतनभोगियों को इस वर्ग का मानते हैं, जो सामान्य जीवन स्तर से भी हीनतर स्थिति में अपना जीवन बीताते हैं।

इस निम्न निम्नवर्ग की दशा तो अत्यंत दयनीय है। शिक्षित न होने के कारण निम्न दर्जे के काम इन्हें करने पड़ते हैं। रोजी-रोटी के लिए दिनभर मेहनत-मशक्कत करनी पड़ती हैं। अत: खाना भरपेट नहीं मिलता और रहने के लिए मकान भीं। परिणामत: वृक्ष के नीचे, रास्ते के किनारे झोपड़ी बनाकर तथा फूटपाथ पर अपना वास करते हैं। अर्थाभाव से भुखमरी से चोरी और गैर कानूनी काम करते हैं। तो कुछ भूखे-नंगे रहकर गली-गली में फिरते हैं। अत: ये लोग सहानुभूति के पात्र बनते हुए दिखाई देते हैं। इस तरह यह वर्ग निम्न स्तर का जीवन जीता हैं क्योंकि, इनके पास आय का निश्चित साधन नहीं है।

इस तरह उच्च-निम्न तथा निम्न-निम्न वर्ग से बननेवाला निम्नवर्ग आज समाज में पग-पग पर दिखाई देता है। जिनका शोषण उच्चवर्ग तथा मध्यवर्ग करता है। मजबूरी विवशता, अर्थ की कमी जिससे आत्मविश्वास का अभाव, अज्ञान, अशिक्षा के कारण अन्याय/अत्याचार सहकर थोड़ा आशावादी बनकर अंधविश्वास में लिप्त यह वर्ग अपना दयनीय जीवन बदलते समय नुसार बिता रहा हैं।

इस तरह उच्चवर्ग, मध्यवर्ग, निम्नवर्ग में समाज को वर्गीकृत किया है।

2.5 समाज : परिस्थितियाँ एवं समस्याएँ :-

किसी भी रचना का अध्ययन करते समय समाज की परिस्थितियों को जानना अत्यंत आवश्यक होता हैं क्योंकि, उन रचनाओं पर समाज की परिस्थितियों का प्रभाव दिखाई देता है। किसी भी देश का साहित्य

समाज से परे नहीं हो सकता। अत: भारतीय साहित्य भी इसके लिए अपवाद नहीं है। समय के अनुसार परिवर्तन होते हैं, जिससे समाज का बदलना अनिवार्य हैं। इसलिए समाज जीवन की परिस्थितियों को समझना आवश्यक हैं। अत: समाज जीवन की समस्या समाज के विसंगत जीवन के कारण उभरती हैं। परिणामत: परस्पर विरोधी परिस्थितियों में समस्या का उद्‌भव होना निश्चित है। पुरानी मान्यताओं को वर्तमान पीढ़ी स्वीकार नहीं करती, जिससे समाज में परस्पर विरोधी परिस्थितियाँ निर्माण होकर, सारा जीवन अस्त-व्यस्त होता है। अत: सामाजिक संस्था व्यक्ति के आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ रहती हैं। सामाजिक विघटन के कारण विविध सामाजिक समस्याएँ निर्माण होती हैं। आज समाज में व्यक्ति की विचारधारा तथा नैतिक मूल्यों को लेकर संघर्ष होता रहा है। और समाज की समस्याएँ निरंतन बढ़ती ही दिखाई देती हैं। समस्याएँ पहले व्यक्तिगत ही होती हैं, जब एक ही समस्या अनेक व्यक्तियों को त्रस्त करें, जिसके कारण समाज के विकास में बाधा निर्माण होती हो तो वह पूरें समाज की समस्या बन जाती हैं। एक सजग रचनाकार इससे अछूता नहीं रह सकता। अत: वह अपने रचनाओं के माध्यम से उन्हें विस्तृत रूप में पाठकों के सामने रखता है। रचनाकार की रचना पर इन समस्यात्मक परिवेश का प्रभाव पड़ता है। इसी वजह से समाज जीवन की समस्याओं का स्वरूप जानना आवश्यक हैं।

2.5.1 राजनीतिक परिस्थिति :-

राजनीति के बल पर ही समाज व्यवस्था को नियंत्रित किया जाता है अथवा निश्चित तरिके से देश को चलाकर जनता की सुविधाओं का ध्यान रखा जाता हैं। सभ्य समाज के लिए आदर्श राजनीति का होना आवश्यक है क्योंकि राजनीति का मूल उद्‌देश्य समाजसेवा है। राजनीतिक परिस्थिति में देश का संविधान सुव्यवस्थित होना जरूरी है। आजादी के पश्चात भारत के नए संविधान के कारण जमींदारी उन्मूलन हुआ है, जिससे कृषकों की स्थिति सुधर गई है। राजनीति में स्वार्थ की वृत्ति प्लेग की तरह फैलती है, जिससे राजनीतिक परिस्थिति समय के अनुसार बदलती रहती है। कानून व्यवस्था में अमूलाग्र बदल हो जाते हैं। राजनीति में नैतिक मूल्यों की कीमत गिरती हुई दिखाई देती हैं। सत्ता स्पर्धा को महत्त्व दिया जाने लगता है। अनेक दलों निर्माण होता है, वे कुछ मात्रा में जाति पर आधारित रहते हैं। जिससे वाममार्ग को प्रोत्साहन मिलता है, सांप्रदायिकता के बल पर नेता गण चुनाव जीतते हैं। डॉ.मंजुला गुप्ता इन स्थितियों का सूक्ष्म अध्ययन कर लिखती हैं -

"राजनीति में दलबदली तथा गलत नीतियों द्‌वारा प्रगति में अवरोध उपस्थित हो रहा है।" [11] इस तरह राजनीतिक परिस्थिति अत्यंत जटिल बनी है। अत: राजनीति पर पूँजीवाद का प्रभाव दिखाई देता है, और वह जनसामान्य के लिए न रहकर उच्चवर्ग के हाथों की कठपुतली बन जाती हैं। जिससे चेतना, एकता की कमी महसूस होने लगती है। परिणामत: नए शोषक के रूप में कुछ नेतागण उभरते हैं। वे निम्नवर्ग तथा मध्यवर्ग पर

अत्याचार करते दिखाई देते हैं। इस तरह मनुष्य जीवन के नस-नस में राजनीति बसी होती है। अशांती को ऐसे ही बढ़ावा मिलता रहने के कारण देश के विकास पर आघात होता है । कभी-कभी विकास लालफीतशाही का शिकार होता हैं। विभिन्न संस्थाएँ राजनीति के आखाड़े बन जाती है। परिवार संस्था, शिक्षा संस्था, विवाह संस्था आदि अनेक संस्थाओं में राजनीति अपने दाँव पेंच चलाने लगती है। कालाबाजार, भ्रष्टाचारी, रिश्वतखोरी राजनीति के पर्याय बनते हैं। राजनीति में अल्पसंख्याक, बहु संख्यांक पिछड़ी जाति के लोगों का अवसर आने पर उपयोग किया जाने लगता हैं। अपनी सरकार को स्थिरत्त्व प्रदान करने के लिए कुछ अवसरवादी नेता इन लोगों का सहारा लेते हैं। ये धोकेबाजी, कूटनीति, कभी-कभी जनता के समझ में नहीं आती है।

शासन व्यवस्था में चपरासी से लेकर उच्च अधिकारी तक भ्रष्टाचार की वृत्ति दिखाई देती है, जिससे नैतिक मूल्यों का पतन होता है। कुछ ऐश्वर्य भोगी, विलासी, राजनीतिज्ञ वेश्यागमन करते वेश्या वृत्ति को बढ़ावा देते हैं। जिससे वेश्या वृत्ति बढ़ती हैं।

उपर्युक्त राजनीतिक परिस्थिति आज के आधुनिक काल में अधिक मात्रा में दिखाई देती है। कुछ सच्चे राजनेता जो समाज सेवक हैं, वे इस राजनीतिक परिस्थिति को नजर-अंदाज करके अपने मूल्यों पर डटकर खड़े हो जाता है, राजनीति में नैतिकता को लाने का प्रयास कर देश को प्रगति पथ पर पहुँचाने की कोशिश करते हैं।

2.5.1.2 **राजनीतिक समस्या :-**

राजनीति का उद्‌देश्य समाजसेवा है। मनुष्य जब इसी उद्‌देश्य में अपना स्वार्थ देखे तो राजनीतिक समस्या उभरने में देर नहीं लगती। कभी-कभी यह समस्या राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय घटनाओं की देन बनती है। इस में किसी दूसरे देश का अपने देश पर होनेवाले आक्रमण से स्वतंत्रता के लिए संघर्ष होता है - जैसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक जटिल राजनीतिक समस्या के रूप में पाया है। आपात कालीन स्थिति राजनीतिक समस्या की ही देन है। राजनीति में नैतिकता न होने के कारण देश का संविधान ठीक तरह से नहीं चल सकता। बिना नैतिकता के संविधान एक मजाक बन जाता है। आपात कालीन स्थिति के लिए सरकार को जिम्मेदार मानकर उस सरकार को गिराना सत्ता स्पर्धा को तथा असफल सरकार की स्थिति को स्पष्ट करता है।

राजनीतिक लोगों की हत्या से देश में देशद्रोही, विद्रोही समाज की कुप्रवृत्ति सामने आती है। राजनीति में भ्रष्टाचार इस भीषण समस्या से दूसरी समस्याओं का निर्माण होता है। भ्रष्ट राजनेता के कारण शासन व्यवस्था में भ्रष्टाचार की मात्रा बढ़ती जाती है। समाज के शासन व्यवस्था में आज बड़ी मात्रा में शासकीय तथा अशासकीय कर्मचारी भ्रष्टाचार करते हैं। कुछ प्रशासकीय अधिकारी सरकारी दफ्तरों में अपनी मर्जी से काम करते हैं। छोटा या बड़ा काम वे रिश्वत लेकर ही करते हैं। एक अफ़सर के अपने ऊपर के अफ़सर के साथ घनिष्ठ संबंध होते हैं। सिनिअर अफ़सर राजनेता से संबंध रखते हैं। परिणामत: भ्रष्टाचार बढ़ता ही जाता है। राजनीति

में सार्वजनिक तथा सरकारी संस्थाएँ राजनेता के हाथों की कठपुतलियाँ बनी हुई दिखाई देती हैं। सामाजिक क्षेत्र में इंजिनिअर से लेकर ठेकेदार तक रिश्वतखोरी बढ़ती जा रही है। शिक्षा संस्था में नौकरी पक्की करने के लिए कुछ संस्था चालक और राजनेता रिश्वत लेते हैं। अपना आदमी शिक्षा क्षेत्र में आए इसलिए अनेक दाँवपेच चलाते हैं। कभी-कभी छात्र इसी कारण से आंदोलन भी करते हैं। स्वार्थी राजनेता छात्रों की युवाशक्ति को अपने वैयक्तिक फायदे के लिए इस्तेमाल कर युवा पीढ़ी को गुमराह और दिशा हीन बनाते हैं। धनलोलुप नेता से राष्ट्र की सुरक्षा धोके में आती है। आतंकवाद को बढ़ावा मिलता है। दलबदलू अवसरवादी नेताओं की वृत्ति से ही अस्थिर सरकार का प्रचलन शुरू होता है, और इससे देश की आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है। परिणामत: गरीब जनता पर अनेक मुसीबतें आने लगती हैं।

इस तरह देश की राजनीतिक समस्या अन्य समस्याओं के उभारने का कारण बनती है।

2.5.2 सामाजिक परिस्थिति :-

समाज का दायरा व्यापक बनने से समाज की आवश्यकताएँ बढ़ती जाती है। स्वतंत्रता पूर्व से समाज अज्ञानी, परंपरा प्रिय, संस्कृति प्रधान, धार्मिक तथा जातिभेद माननेवाला है। इसी वजह से नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय रही है। नारी को भोग की वस्तु समझकर उसी तरह का बर्ताव किया जा रहा है। अत: 19 वीं सदी में अंग्रेजों के आगमन तथा कुछ शिक्षित विद्वानों के कारण समाज में जागृति का वातावरण निर्माण हो रहा है। इस स्थिति को देखकर कुछ सुधारवादी विद्वान आगे बढ़कर आंदोलन चलाकर सुधारवादी संस्थाओं का निर्माण करते हैं। जो समाज को दिशा दर्शन कर सकती हैं। नारी की पर्दा पद्धति , सती प्रथा, दहेज प्रथा, अधिक मात्रा में बंद हुई है। स्वतंत्रता आंदोलन में लोग अपने आपको पूरी तरह झोंक देते हैं। जिससे देश को स्वतंत्रता मिल जाती है। समाज के उच्चवर्ग तथा मध्यवर्ग में आधुनिक साधनों का आकर्षण बढ़ता है। जिससे बिजली का महत्त्व बढ़कर वह अनिवार्य आवश्यकता बन जाती है। समाज में शिक्षा का प्रसार बढ़ता रहता है जिससे शिक्षा व्यवस्था में अंग्रेजी शिक्षा का महत्त्व बढ़ता दिखाई देता है। शिक्षा में छात्रांदोलन जैसी विकृतियों की निर्मिति छात्रों की माँगों की पूर्णता के लिए हुई है। अत: नारी उच्च शिक्षित होकर उच्च पद पर जाने योग्य बन जाती है। अर्थ को समाज में महत्त्व रहता है। जिसके आधार पर समाज को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है - १. उच्चवर्ग, २. मध्यवर्ग, ३.निम्नवर्ग। आर्थिक विषमता के कारण आर्थिक विपन्नता निर्माण होती है। भ्रष्टाचार तथा वर्गभेद के कारण निम्नवर्ग का शोषण किया जाता है। अर्थाभाव के कारण मध्यवर्ग पैसों के पीछे दौड़ता है और घुटन भरी जिंदगी जीता है। तनाव से मुक्त होने के लिए समाज में व्यसन का प्रभाव बढ़ने लगता है। इसी कारण युवा वर्ग की उन्नति में बाधाएँ आती हैं। अत: विदेशी प्रभाव से समाज देश की पुरानी संस्कृति कुछ मात्रा में ही भुलकर नई संस्कृति के नुसार चलता है।

समाज में विवाह संस्था को महत्त्व दिया जाता है।अत: शिक्षा प्रचार के बावजूद भी दहेज प्रथा, तथा कुछ मात्रा में बहु विवाह होते हैं। समाज में कुछ उच्चशिक्षित लोग अपनी मर्जी से तथा पसंद से विवाह करते हैं। जाति-पाति के बंधन तोड़कर अंतर्जातीय विवाह भी होते हैं। इससे समाज की रूढ़ियाँ, रीति-रिवाज, दहेज के कड़े बंधन शिथिल होते हैं। अंतर्जातीय विवाह के साथ-साथ समाज में अनमेल विवाह भी होते हैं। शिक्षा प्रसार तथा आधुनिक वैचारिक स्थिति से पुराने विवाह पद्धति से समाज में विवाह विच्छेद होते हैं।

समाज में स्त्री-पुरूष संबंधों को प्राचीन काल से महत्त्व हैं। समाज में यौन तथा आंतरिक स्त्री-पुरूष संबंध दिखाई देते हैं। यौन संबंध आत्मीक प्रेम की विकृति का ही रूप है। स्त्री-पुरूष के सुखमय दांपत्य संबंध के कारण परिवार संस्था, विवाह संस्था सफल होती है। सुखमय दांपत्य के साथ पर पुरूष से विवाहित स्त्री तथा विवाहित पुरूष का पर स्त्री से संबंध और आर्थिक विपन्नता के कारण दुखमय दांपत्य-संबंध भी दिखाई देते हैं।

समाज में परिवार संस्था ही समाज की भूमि है। आधुनिकीकरण के कारण समाज में संयुक्त परिवार का विघटन हो रहा है, जिससे व्यक्ति में आत्मीयता, लगाव, अपनापन आदि भाावनाएँ नष्ट होती दिखाई देती हैं। एकल परिवार की भी कुछ दयनीय अवस्था इसमें सम्मिलित है। आदमी पर घर का सारा बोझ होने के कारण अर्थाभाव से विवश उसे रिश्वत लेनी-देनी पड़ती है। पाश्चात्य जीवन के प्रभाव के कारण रीति-रिवाजों का महत्त्व कम होता हुआ आज दिखाई देता है। समाज में वेश्या संबंध भी दिखाई देते हैं। भ्रष्ट राजनीति, विवाह संस्था की असफलता, परिवार का विघटित होना आदि के कारण युवा मानसिकता में विद्रोह की भावना दिखाई देती है। युवाओं की व्यसनाधीनता भी समाज को भस्म कर सकती है। समाज में पैसों का मूल्य बढ़ने के कारण भाई-भाई में दरारें पड़ती हैं। बढ़ती आबादी के कारण मकान की समस्या सामने आती है। अत: समाज स्वप्नजीवी होता है। इस तरह समाज की परिस्थिति समय के नुसार बदलती है। जिससे कुछ फायदा भी होता और नुकसान भी।

2.5.2.1 सामाजिक समस्याएँ :-

समाज में अनेक समस्याएँ होती हैं लेकिन कुछ ही समस्या ऐसी होती है, जो व्यापक रूप में फैलती हैं। जिससे मनुष्य को मुसीबतों का सामना करना पड़ता हैं। कुछ सामाजिक समस्याएँ इस प्रकार हैं -

प्राचीन काल से सती प्रथा, बाल विवाह जैसी भीषण समस्या का सामना करना पड़ा है। लेकिन आधुनिक समाज में शिक्षा प्रसार के बावजूद नारी को विधवा समस्या का भी सामना करना पड़ता है। विधवा होने के बाद घर की पूरी जिम्मेदारी उस पर ही आती है। डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर लिखते हैं - "विधवा के कुंठित जीवन के दो प्रमुख कारण है एक आर्थिक परावलंबन, दूसरा उसकी स्वाभाविक वासनाओं की अतृप्ति।"[12]

बलात्कारीत नारी को आत्महत्या के सिवा दूसरा रास्ता नहीं बचता है। इस विकृति का शिकार बनी, अबला नारी को मरने के बाद भी समाज ताने मारता है, कोई उसे सहानुभूति नहीं दिखाता। कभी-कभी नारी का सौंदर्य ही उसके सामने मुसीबतें लाता हैं। इस तरह सुंदरता ही नारी के लिए समस्या बनती है। आज नौकरी पेशा नारी के पास समय की कमी तथा उसके मित्रों के साथ खुले व्यवहार से पति-पत्नी में तनाव की स्थिति निर्माण होती है। शिक्षित, नौकरी पेशा नारी पुरूषसमानाधिकार चाहती है। अधिकार न मिलने से वह विवाह-विच्छेद करने में आगे-पीछे नहीं देखती। वर्तमानकाल में नारी पुरूष से पीटती हुई दिखाई देती है। इस तरह नारी समस्या में नारी शोषण आज भी कम-अधिक मात्रा में समाज में दिखाई देता है।

विवाह की समस्या भी समाज में दिखाई देती है। अगर स्त्री-पुरूष के बीच का सहयोग अंत तक सहयोग सा रहा, तो विवाह सफल होते हैं। वरना वैवाहिक समस्या का निर्माण होता है, जैसे बहु पत्नीत्त्व, अनमेल विवाह, अंतर्जातीय विवाह, विलंबित विवाह आदि समस्याएँ अंधश्रद्धा , अशिक्षा, दहेज प्रथा, जातिभेद, आर्थिक विपन्नता के कारण समाज में उभरती है और बढ़ती ही रही है। विवाह से ही परिवार बनता है और परिवार समाज का मूलाधार है। इस परिवार संस्था को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा है जैसे संयुक्त परिवार की भारतीय संस्कृति स्वतंत्रता के बाद टूट गई और संयुक्त परिवार के विघटन से एकल परिवार का निर्माण होने लगा। राम आहूजा लिखते हैं - "परिवार विघटन की एक ऐसी स्थिति है जिसमें सामंजस्यपूर्ण व मधुर संबंध टूट गए हो, सदस्यों के बीच सहयोग कम हुआ हो सामाजिक नियंत्रण कमजोर हो गया हो या अनुशासन व एकता में कमी आ गई।"[13]

आज विघटित परिवार की दयनीय स्थिति का सामना समाज को करना पड़ रहा है।पारिवारिक समस्या में एकाकी नारी जीवन, दुखमय दाम्पत्य जीवन, पति का पर स्त्री से संबंध, पत्नी का पर पुरूष से संबंध परिणामत: पति-पत्नी में तनाव, तथा बच्चों का माता-पिता से व्यावहारिक संबंध आदि आज उभर रहा हैं।

समाज में गुंड़ा-गर्दी, हिंसा से अन्याय/अत्याचार बढ़ता है। जिससे आम आदमी स्वच्छंद जीवन नहीं जी सकता । समाज में अशांति फैल कर मानव की मानसिकता विद्रोह का रूप धारण करती है। जो आज पग-पग पर दिखाई देती है। जिससे अकेलेपन की समस्या उभर आती है और वह अंदर से टूटा हुआ महसूस करता है। जिससे मनोरूग्ण की संख्या बढ़ रही है, जो सभ्य समाज के लिए एक भयंकर आघात है।

इस तरह समाज में सामाजिक समस्या आज हर एक को त्रस्त करती है।

2.5.3 **आर्थिक परिस्थिति :-**

समाज और अर्थ का अभिन्न संबंध हैं क्योंकि अर्थ ही समाज की, देश की उन्नति कर मनुष्य को प्रतिष्ठा प्राप्त करा देता है। प्राचीन भारतीय आर्थिक परिस्थिति अच्छी थी लेकिन परकीय आक्रमणों से भारतीय खजाने लूट लिए गए। अंग्रेजों के औद्योगिक विकास के कारण आर्थिक परिस्थिति में अमूलाग्र बदल हुए।

अकाल, बाढ़ की वजह से देश का आर्थिक ढाँचा गिर जाता है। जिससे बेरोजगारी सामने खड़ी होती है। धन के आधार पर ही समाज का वर्गीकरण होता हैं। उच्चवर्ग धन समेटता है जिसके कारण देश की आर्थिक अवस्था उनके हाथ आती है। अत: मध्यवर्ग और निम्नवर्ग का शोषण होने लगता है। मध्यवर्ग की टूटती आर्थिक स्थिति और महँगाई के कारण उन्हें बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। परिणामत: अर्थ के प्रति आसक्ति उनके मन में बढ़ती जाती है। आर्थिक परिस्थिति के बदलते स्वरूप के कारण गरीबी तथा अर्थलोलुपता से रिश्वतखोरी का जन्म होता है। । इस आर्थिक परिस्थिति के कारण स्त्री-पुरूष प्रवृत्ति में अंतर बढ़ता है। पुरूष नारी का सौदा करने में शरम महसूस नहीं करता है। इस तरह अर्थाभाव के कारण नारी की स्थिति और भी दयनीय बनती जाती है।

उपर्युक्त प्रकार से वर्तमान युग में रूपयों का महत्त्व बढ़ता है और जीवन के नीतिमूल्य बदलने लगते हैं।

2.3.5.1 आर्थिक समस्या :-

यह समाज की सबसे भीषण समस्या है। प्राचीन काल में इस समस्या का ज्यादा बोलबाला नहीं था। लेकिन जनसंख्या बढ़ोत्री, परकिय आक्रमणों से भारतीय खजाने लूटते गए और आर्थिक समस्याएँ उभरती गई। समाज विभाजन अर्थ पर होने के कारण, तीन वर्गों में अर्थ का विभाजन हुआ और समाज के मध्यवर्ग, निम्नवर्ग को बेकारी की समस्या का सामना करना पड़ा। जिससे अर्थाभाव निर्माण हुआ और संयुक्त परिवार का विघटन शुरू होकर रिश्तों में खोखलापन आ गया। परिवार भी अर्थाभाव की चपेट में आ गए और रिश्वत लेना शुरू हुआ। कुछ नारियाँ अपना शरीर बेचकर खुद का परिवार चलाने लगी। पदोन्नती के लिए नारी अपने चरित्र को बेचने लगी। आज के ज्यादातर अनमेल विवाह दहेज न देने के कारण होते हैं। गरीब माँ-बाप अपनी लड़की की अर्थाभाव के कारण किसी अधेड़ के साथ शादी कराते हैं, जिससे लड़कियाँ घूट-घूटकर अपनी जिंदगी बिताती हैं। इसी वजह से कुंठाग्रस्त जीवन, अकेलापन जैसी समस्याएँ निर्माण होती है और रिश्तो में दरार पड़ती हैं। मनुष्य में आत्मीयता नहीं रहती।

इस तरह आर्थिक समस्या देश, समाज , परिवार को खोखला बनाती है। आज आर्थिक समस्या का भीषण रूप समाज में देखने को मिलता है।

2.5.4 धार्मिक परिस्थिति :-

समाज धर्म पर आधारित रहता है। डॉ.आहूजा लिखते हैं - "धर्म सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में निर्धारित व्यवहार व दायित्त्व के निर्वाह से संबंधित है।"[14]

इस तरह प्रत्येक धर्म का प्रभाव राष्ट्र, समाज, परिवार और व्यक्ति पर पड़ता रहता हैं। हिंदूओं में भौतिक सुविधा से ज्यादा धर्म तथा मोक्ष प्राप्ति को महत्त्व है क्योंकि, ईश्वर पर विश्वास ही धर्म का मूल सत्य है। लेकिन मध्यकाल में समाज की धर्म की तरफ देखने की दृष्टि बदल गई, साथ ही नारी पर धार्मिक प्रभाव ज्यादा दिखाई देता है। धर्म के अनेक स्त्रोत एवं रूप हैं। मृत्यु के समय धार्मिक विधि, ईश्वर की कृपा पर विश्वास, प्रायश्चित से पाप धूल जाएँगे की भावनाएँ धर्म में प्रचलित होती है। धर्म के कारण लोगों का साधु-महात्मा पर दृढ़ विश्वास होता है। जिससे साधू-महात्मा का महत्त्व समाज में बढ़ने लगता है। धर्म में अंधश्रद्धा के कारण रूढ़ि-परंपरा का पालन किया जाता है जिससे जाति व्यवस्था में भेद किए जाते हैं। विभिन्न संप्रदायों का निर्माण होने लगता है। मनौतियाँ, बली प्रथा, देवी-देवता को प्रसन्न करना आदि रीति-रिवाजों का पालन धर्म में आवश्यक रहता है।

इस तरह धार्मिक स्थिति कुछ मात्रा में अंधश्रद्धा पर निर्भर होती है।

2.5.4.1 **धार्मिक समस्या :-**

समाज के सभी वर्गों में धार्मिक भावना दिखाई देती है। जिसके कारण धर्म को महत्त्व प्राप्त हुआ है। लेकिन समय परिवर्तन के कारण धर्म में जो भक्ति भावना थी उसका स्वरूप बदल गया और संप्रदायों का निर्माण हुआ। परिणामत: अधंश्रद्धा, जाति भेद बढ़ता गया और धर्म में एकता की भावना नष्ट हो गई। जिससे धर्म में अनेक विकृतियाँ आने लगी। ईश्वर चिंतन के स्थान पर पूजन-भजन, कर्मकांड, कुप्रथाओं का प्रचलन चलता रहा है। जिससे अंधश्रद्धा सब के मन में बस गई और धर्माभिमान की भावना बढ़ गई। इसी अंधश्रद्धा का फायदा साधू-महंत, ब्राह्मणों ने लिया और बिना श्रम के लोगों की अंधश्रद्धा पर अपना पेट पालने लगे। इस तरह इन पाखंड़ियों के कारण धर्म एक ढकोसला बन गया, जिससे उसका वास्तविक रूप नष्ट होकर अंधश्रद्धा फैलने लगी। आज कुछ मंदिर, आश्रम जादू, चमत्कार प्रदर्शन और भंग के अड्डे बन गए हैं, कभी-कभी वहाँ काला बाजारी जैसे भयानक गैर कानूनी कार्य चलते दिखाई देते हैं।

आज धर्म में जाति भेद, सांप्रदायिकता बढ़ती जा रही है। जातिभिमान, धार्मिक कट्टरता समाज में व्याप्त है। सांप्रदायिकता संगठन आज समाज में विद्रोह फैला रहे हैं। डॉ.सुधाकर गोकाककर लिखते हैं - "धर्म रूढ़ि अंधश्रद्धा भारतीय जन जीवन की प्रगति के रास्ते रोकते रहे हैं।"[15] यहाँ व्यक्ति, परिवार, समाज, देश के लिए धर्म से निर्मित समस्याएँ दिखाई देती हैं। और कुछ भ्रष्ट नेता सत्ता हस्तांतरण के खातिर धर्म, जातिभेद सांप्रदायिकता का उपयोग कर अपना उल्लू सीधा करते हैं।

इस तरह आज धार्मिक समस्या अत्यंत भयावह रूप में हमारे सामने खड़ी है जिसके परिणाम समाज के हर एक व्यक्ति को भुगतने पड़ रहे हैं।

2.5.5 सांस्कृतिक परिस्थिति :-

मनुष्य की जीवन पद्धति ही संस्कृति है। भारतीय प्राचीन संस्कृति आदर्श है क्योंकि, उसमें उत्सव, पर्व, त्यौहार, मेले, लोकगीत, विविध खेल, रीति-रिवाज, संयुक्त परिवार आदि का प्रचलन होता है। जिससे देश में एकता दिखाई देती है। समय परिवर्तन के कारण भारतीय संस्कृति में अनेक बदलाव आते हैं। अंधश्रद्धा, कुप्रथाएँ थोड़ी बहुत मात्रा में बढ़ने लगती है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से रहन-सहन, आचार-विचार, खान-पान, विवाह पद्धति में बदलाव आता है। पहले लोग धोती-कुर्ता पहनते थे परिवर्तन के कारण पँट-शर्ट, बुट आदि आधुनिक पोशाख पहनने लगे। खान-पान में अमूलाग्र बदल रहते हैं - जैसे रोटी के स्थान पर ब्रेड, चायनीज जैसे पदार्थ बनने लगते हैं। परिणामत: कृषि प्रधान संस्कृति का महत्त्व कम होकर और औद्योगिक संस्कृति का महत्त्व बढ़ने लगता है। शिक्षा प्रसार के कारण पुरूष प्रधान संस्कृति में नारी अपना अलग व्यक्ति स्वातंत्र्य तथा पुरूषसमानाधिकार की माँग के लिए संघर्ष करती है। जिससे नारी की स्थिति बदलती है। सती प्रथा, बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह बंधन, धार्मिक कर्मकांड़, अशिक्षा आदि स्थितियों की मात्रा कम होती है। आधुनिक काल में शिक्षा प्रधान संस्कृति के जन्म लेने से . देश में वैज्ञानिक दृष्टिकोन बढ़ने लगा है। खेलकूद की प्रतियोगिताएँ भारत में होती हैं, खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाने की संस्कृति सामने आती है। लोकगीत, उत्सव, पर्व, मेले, सर्कस और मनोरंजन को सरकार बढ़ावा देती है, जिससे विभिन्न देशों से सांस्कृतिक लेन-देन शुरू होती हैं। भारतीय प्राचीन संस्कृति के जैसे अंधश्रद्धा, कुप्रथाएँ, संयुक्त परिवार नष्ट होकर, स्वानुभव को महत्व तथा एकल परिवार का निर्माण हो रहा है।

अत: आधुनिक भारतीय संस्कृति में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है।

2.5.5.1 सांस्कृतिक समस्या :-

मानव विकास में जो मूल्य **सहायक होते हैं, वे संस्कृति के प्रतीक हैं। इन मूल्यों के बदलाव के** कारण सांस्कृतिक समस्याएँ उभरने लगती है। भारतीय प्राचीन संस्कृति में उत्सव-पर्व मनाती जनता तथा अंधश्रद्धा युक्त मानवी जीवन, समय परिवर्तन के कारण बदलने लगा। अत: रीति-रिवाज, रूढ़ि-परंपराएँ, कृषी प्रधान संस्कृति खत्म होने लगी और संगठीत परिवार की संस्कृति का ऱ्हास होने लगा और एकल परिवार की संस्कृति ने जन्म लिया। एकल परिवार की कुछ अपनी परेशानियों के कारण मनुष्य स्वार्थी, संकुचित वृत्ति का बनकर नकाबी दुनिया में जीने लगा है। परिणामत: मनुष्य में वैयक्तिकता बढ़ने लगी है। रिश्तों में दिखावटीपन आता रहा है। अत: अपनापन नष्ट होने लगा। आधुनिक समाज की यहीं संस्कृति है जो आज एक समस्या बनी हुई है। स्त्री-पुरूष शिक्षा प्रसार के कारण कुछ शिक्षित युवा शराब पिना, सिगरेट पीना, मौजमस्ती करना, पाश्चात्य संगीत का शौक पालना, अंग्रेजी शब्दों से रौब बढ़ाना, माता-पिता से हटकर रहना आदि विकृतियाँ संस्कृति में आने लगी हैं। परंपरागत विवाह पद्धति को तोड़ कर प्रेम विवाह, अंतर्जातीय विवाह होने लगे हैं।

लेकिन कुछ दिन बाद विवाह विच्छेद करने में पति-पत्नी को कोई भी दुख नहीं होता। आज विवाह बंधन में आत्मीयता, प्रेम, वात्सल्य, जैसे बंधन खत्म होते जा रहे हैं।

आज सरकारी दफ्तरों में घुटनभरी जिंदगी का सामना कर्मचरियों को करना पड़ रहा है। लोग स्वार्थ के लिए पार्टियाँ, मनोरंजन करते हैं, क्योंकि धन सब का मालिक बना है। अर्थाभाव के कारण मनुष्य नैतिक-अनैतिक मार्ग से धनार्जन करता है। आज औद्योगिक विकास, आधुनिकीकरण के कारण संस्कृति अर्थप्रधान बनी है। परिणाम स्वरूप सांस्कृतिक मूल्य ढह जाते हैं, और सांस्कृतिक समस्याएँ निर्माण होती है।

इस तरह समाज जीवन की परिस्थितियाँ और समस्याएँ समय परिवर्तन से बदलती रही है। जिसका परिणाम रचनाकारों पर होता है और उसके अनुसार ही रचना का गठन किया जाता है। इसलिए रचनाओं का अध्ययन करते समय समाज जीवन की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थिति तथा समस्याओं को देखना अनिवार्य होता हैं।

2.6 **समाज जीवन की विशेषताएँ :-**

समाज की कुछ ऐसी बातें होती हैं, जो समाज को विशेष बनाती है। उसी बातों की वजह से समाज को विशेष महत्त्व आता है और समाज की विशेषताएँ कभी उस समाज के लिए गौरवास्पद है तो कभी निराशात्मक बात होती है - जैसे एक ही सिक्के के दो पहलू होते हैं। वैसी ही ये विशेषताएँ एक ओर समाज के लिए अच्छी है तो दूसरी ओर बूरी भी साबित होती हैं। इस तरह समाज जीवन की अच्छी बुरी बातें समाज की विशेषताएँ बनकर समाज को विशिष्ट बनाती है। समाज जीवन की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

2.6.1 **संयुक्त परिवार :-**

भारत की प्राचीन संस्कृति में संयुक्त परिवार ही प्रचलित थे। जिससे एकता का आधिक्य दिखाई देता था। घर के सभी सदस्य एक दूसरे की सलाह से कोई भी कार्य पूरा करते थे। घर का बुजुर्ग आदमी मुखिया के रूप में घर की सुरक्षा देखता था। परिवार में बच्चों पर आदर्श संस्कार किए जाते थे। लेकिन अंग्रेजों के आगमन से संयुक्त परिवार कुछ ही मात्रा में रह गए। औद्योगिक विकास के कारण लोग शहर की तरफ बढ़ने लगे। शहर में मकान समस्या या आर्थिक तनाव के कारण व्यक्ति, संयुक्त परिवार का बोझ सह नहीं पाया। परिणामत: संयुक्त परिवार का विघटन होता रहा और एकल परिवार बनने लगे। लेकिन कहीं-कहीं संयुक्त परिवार आज भी अपनी शान के साथ जीवन बीता रहे हैं, जो आधुनिक समाज की विशेषता ही है। इसीलिए डॉ.अर्जुन चव्हाण लिखते हैं -"संयुक्त परिवार प्रथा भारतीय समाज की अपनी अलग पहचान है।"[16]

इसी तरह संयुक्त परिवार आज भी भारत में विशेष महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। जिनमें बुजुर्ग लोग

अपने मार्गदर्शन में, संस्कृति का पालन कर परिवार को चला रहे हैं और परिवार न टूटे इसकी फिक्र हमेशा करते रहते हैं।

2.6.2 **देशप्रेमी समाज :-**

देश के लिए प्रेम होना अत्यंत गर्व की बात है क्योंकि देश हमारी माता है। स्वार्थी वृत्ति के कारण कुछ व्यक्ति सिर्फ अपना ही फायदा देखते हैं। इसी कारण प्राचीन काल से लेकर आज तक देश को परकिय आक्रमणों का सामना करना पड़ा। परिणामत: देश को कई वर्ष तक अंग्रेजों की गुलामी करनी पड़ी। कुछ राष्ट्रप्रेमी अपनी माता को परकियों के चंगुल से छुड़ाने के लिए जी जान से प्रयत्न करते रहे। इसीलिए वे अपना व्यक्तित्व, परिवार सब त्याग कर राष्ट्रीय संग्राम में सहभाग लेकर देश को आजाद करना प्रथम कर्तव्य समझते हैं। ऐसे देशप्रेमी व्यक्ति ही एक आदर्श के रूप में दूसरी पीढ़ी के सामने खड़े हैं तो वक्त आने पर अपने प्राणों की बली देश पर न्योछावर करते हैं। इस तरह आज के यांत्रिक युग में देशप्रेम होना एक विशेषता कहलाई जाएगी, जो प्रगतिशील युवाओं के लिए आदर्श की बात हैं।

2.6.3 **संस्कृति प्रिय समाज :-**

संस्कृति से हम अपने अतीत को सुरक्षित रख सकते हैं, इसी कारण समाज में संस्कृति को विशेष महत्त्व है। पाश्चात्य भौतिकवादी संस्कृति के प्रभाव के कारण अपनी आध्यात्मिक संस्कृति को लोग आज भूलने लगे हैं। फिर भी कुछ ऐसे लोग हैं जो अपनी संस्कृति को आदर्श मानकर, उसी के अनुरूप अपना जीवन-यापन करते हैं जो संस्कृतिप्रिय कहलाते हैं। उत्सव-पर्वों को जोश के साथ मनाना, मेले, सर्कस, विवाह पद्धतियाँ, राम लीला, कृष्ण लीला, मनोरंजनात्मक खेल खेलना, रूढ़ि-परंपरा का पालन, सांस्कृतिक स्थलोंपर आत्मशांति पाना यहीं संस्कृति प्रिय मानव की निशानी है।

इस तरह आदर्श संस्कृति का समाज में महत्त्व है। परिणामत: मानव का संस्कृति प्रिय बनना अनिवार्य है।

2.6.4 **विद्रोही समाज :-**

समाज में अन्याय/अत्याचार बढ़ने से विद्रोह का जन्म होता है और मनुष्य अपने पर हुए अत्याचार का बदला लेने के लिए विद्रोह का सहारा लेता है। आज आधुनिकीकरण, शहरीकरण, भ्रष्ट शासन व्यवस्था, नारी की दयनीय स्थिति, पुलिस का अत्याचार, आर्थिक समस्या में महँगाई, बेकारी से मनुष्य त्रस्त है। उसकी सहनशक्ति कम हो गई है जिससे वह विद्रोह करके समाज में अपना अस्तित्व बनाता है। व्यक्ति का विद्रोह आंदोलन, बड़े नेताओं की हत्याएँ, सार्वजनिक स्थलों पर आत्मदाह तथा नशिली चीजों का सेवन कर अपनी

जिंदगी बरबाद करना आदि कई रूपों में दिखाई देता है। अपने आप से तथा समाज से विद्रोह की भावना ही विद्रोही समाज का निर्माण करती है।

2.6.5 आत्मनिर्भर साहसी नारी :-

प्राचीन काल में नारी को भोग्य वस्तु माना जाता था। इसी कारण वह अन्याय अत्याचार का शिकार बनी रही। लेकिन शिक्षा प्रसार, बदलती रूढ़ी-परंपरा, रीति रिवाजों के कारण आज नारी की स्थिति बदल चुकी है। जो समाज की विशेष घटना है क्योंकि नारी समाज का महत्त्वपूर्ण अंग है। शिक्षित नारी अपने परिवार को शिक्षित बना सकती है। शिक्षा के साथ ही नारी में साहस आत्मविश्वास होना आवश्यक है। इन दो हत्यारों से वह अपने परिवार के साथ-साथ खुद पर आए मुसीबतों का सामना कर सकती है। साहसी वृत्ति के कारण ही विधवा नारी परिवार का पालन-पोषण अच्छी तरह से करती है और घर-बाहर की समस्याओं का हल भी कर रही है। नारी में साहस पहले से ही होता है लेकिन पुरूषों के अत्याचार वृत्ति के कारण वह दब जाता है।

आधुनिक काल में शिक्षा प्रसार के कारण नारी शिक्षित हुई है, और आज शिक्षा स्तर की उच्च शिक्षा प्राप्त कर उत्साह से अपना कार्यभार सँभाल रही है। उसके साथ ही अपने परिवार का पूरा ध्यान भी रखती है। आज एकल परिवार में पुरूष पर सब बोझ पड़ रहे हैं, लेकिन उच्च शिक्षित नारी आज नौकरी कर अपने परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाकर पति को सहयोगी के रूप में मदत करती है। डॉ.अर्जुन चव्हाण लिखते हैं - "नारी का यह रूप उसकी क्षमता का परिचायक है।"[18] अत: जिससे नारी में आज व्यक्ति स्वातंत्र्य की भावना जाग्रत हुई है। वह अपना अलग व्यक्तित्व चाहती है। पुरूष के कंधे-से-कंधा मिलाकर काम करनेवाली यह नारी पुरूष समानाधिकार के लिए साहस के साथ संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। आज नारी देश प्रमुख से लेकर आदर्श गृहीणी तर का सफ़र तय करती है जो सभ्य समाज की विशेषता बन चुकी है।

2.6.6 महत्वाकांक्षी युवावर्ग :-

आधुनिक काल में युवा वर्ग अपनी बुद्धि के कारण नए अविष्कार तथा नई वैचारिक धारा से देश की प्रगति करता है। कुछ युवा आज बहकावे में आकर अपना जीवन गलत तरिके से जी रहे हैं। जिससे युवा पीढ़ी निराशा, घुटन, विद्रोह में बरबाद हो रही है। लेकिन कुछ युवा अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। समाज जीवन की समस्याओं का यह युवक डटकर मुकाबला करते हैं और अपनी प्रगति के मार्ग को आसान करते हैं। किसी आदर्श का अनुकरण कर युवक मेहनत से कठिन-से-कठिन काम भी आसान कराते हैं। युवावर्ग अपनी जिम्मेदारियाँ पहचान कर भविष्य को बनाने में तन-मन की शक्ति लगाकर ईमानदारी से जीवन बीताने की कोशिश करते हैं।

इस तरह महत्त्वकांक्षी, आत्मविश्वासी, मेहनती युवकों की देश की अत्यंत जरूरत है। जिससे देश विश्व में अपना ऊँचा स्थान बना सकता है और ऐसे युवकों का समाज में होना स्वाभिमान की बात है।

2.6.7 समलिंगी आकर्षण :-

समाज में स्त्री-पुरूष संबंध तो साधारण बात है। परंतु पुरूष-पुरूष, स्त्री-स्त्री संबंध असाधारण घटना है, जिसे हम समलिंगी आकर्षण कहते हैं। प्रकृति नियम के विरूद्ध यह घटना समाज के लिए विशेष है। आज छोटे बच्चों में कुछ मात्रा में समलिंगी आकर्षण पाया जाता है, लेकिन बड़े भी इस वृत्ति से बचे नहीं है। समलिंगी आकर्षण यह बात कुछ लज्जास्पद हैं। अगर ऐसा होता रहा तो स्त्री का और पुरूष का महत्त्व कम हो जाएगा और समलिंगी आकर्षण में ही सब समाधान खोजेंगे। परिणामत: उसके भीषण परिणाम समाज को भुगतने पड़ेंगे।

इस तरह इस विशेष वृत्ति के कारण समाज को भयंकर स्थिति का सामना करना पड़ेगा। आज समाज समलिंगी आकर्षण वृत्ति को रोकने में असफल दिख रहा है।

2.6.8 कलाप्रिय वात्सल्यमयी वेश्या :-

सभ्य समाज में वेश्या होना ठीक बात नहीं है। फिर भी समाज की आर्थिक विपन्नता तथा अन्य बिकट परिस्थिति के कारण नारी को मजबूरी में वेश्या व्यवसाय स्वीकारना पड़ता है। पहले प्राचीन समाज में वेश्या सिर्फ अपनी कला बेचती थी, लेकिन कुछ वासनात्मक पुरूषों के कारण कलाप्रिय वेश्या शरीर बेचने के लिए मजबूर हुई।

तन बेचना ही उसका व्यवसाय बन गया। लेकिन कुछ वेश्या समाज में ऐसी होती हैं, जो कला को ही बेचती है, कला को ही सब कुछ मानती है, जो एक विशेष बात थी। कला बेच कर अपना गुजारा करती, जिससे उसे कहीं भी शरमिंदा नहीं होना पड़ता। आज समाज में ऐसी वेश्या कुछ अंश मे ही मिलेगी। वेश्या आखिर एक नारी है और नारी के वात्सल्यमयी रूप के कारण उसे समाज में आदर्शमयी माना जाता है। इसी वात्सल्य के कारण वह अपना सब कुछ दाँव पर लगाती हैं और किसी दुखी परिवार की मदद करके अपने वात्सल्य को सब में बाँट देती है। इसी तरह की वेश्या समाज में आदर्श के रूप में दिखाई देती हैं।

इस तरह समाज की विशेषताएँ समाज को विशेष बनाती हैं।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि कोशकार समाज के अर्थ के रूप में झुंड, समूह, विशिष्ट उद्देश्य युक्त सभा तथा गिरोह, वर्ग दल, एक जगह पर एक ही प्रकार का काम करनेवाले लोग आदि को स्पष्ट करते हैं। तो आधुनिक समाजशास्त्री तथा विद्‌वान समाज का विस्तृत मानवता यह अर्थ स्पष्ट करते हैं। कुछ विद्‌वान समाज की भावुकता, आपसी सहचर्य को महत्व देते हैं, सामाजिक संबंधों के जाल सामाजिक संस्था के व्यवस्थात्मक संबंधों के रूप में समाज को स्पष्ट करते हैं। इस से हम कह सकते हैं कि सामाजिक संस्था से

निर्मित, व्यक्ति समूहों के आपसी संबंध तथा सामाजिक संबंधों की उद्देश्य निहित बुनावट ही समाज है। सामाजिक संबंधो की बुनावट में ही समाज का स्वरूप दिखाई देता है। व्यक्ति समाज की ईकाई बनकर संस्कृति, धर्म, मर्यादा, नियमों का पालन कर विवाह संस्था, परिवार संस्था, राज्य संस्थाओं जैसी अनेक छोटी-मोटी सामाजिक संस्थाओं से अपनी आवश्यकताएँ पूरी करता है। समाज मनुष्य का बौद्धिक विकास कर पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलते आए ज्ञान, वंश, संस्कृति, परंपरा, रीति-रिवाजों को आगे बढ़ाकर मानव को रोटी, कपड़ा, मकान की व्यवस्था प्रदान कर उसका जीवन सुखी बनाने का प्रयत्न करता है। इसी कारण मनुष्य जीवन में समाज विशेष महत्त्व रखता है।

कुछ विद्वानों ने धन के साथ-साथ और भी कसौटियों पर समाज को तीन वर्गों में विभाजित किया हैं जैसे उच्चवर्ग, मध्यवर्ग, निम्नवर्ग। उच्चवर्ग के लोग मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग का शोषण करते हैं। मध्यवर्ग में बुद्धिवादी लोगों का समावेश है। जो पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करते हैं। वे ज्यादातर इज्जत से प्यार और बदनामी से ड़रते हैं। सुख-दुख से लड़ते हुए अपना जीवन बीता रहे हैं। निम्नवर्ग श्रमिक के रूप में अपने श्रम का मूल्य मासिक वेतन में पाता है जैसे कृषक, मजदूर, चपरासी आदि। अर्थाभाव से यह वर्ग चोरी, भुखमरी, मकान की समस्या से ग्रस्त रहते हैं। इस तरह यह वर्ग दयनीय जिंदगी जीता है।

किसी रचना का ठीक तरह से अध्ययन करना याने समाज की परिस्थिति समस्याओं को जानना है। समाज में राजनीति के बल पर समाज व्यवस्था चलती है। राजनीति में कुछ ऐसी परिस्थितियाँ आती है, जिससे राजनीति जन सामान्य के लिए न रहकर पूँजिपतियों के हाथ की कठपुतली बन जाती है। जिससे शिक्षा, विवाह, परिवार जैसी अनेक संस्थाएँ राजनीति के आखाड़े बनते हैं और भ्रष्ट व अवसरवादी नेता समाज के भक्षक बनकर जनता का शोषण करते हैं। ऐसी विसंगत परिस्थितियों के कारण ही समाज में समस्याएँ निर्माण होती हैं। राजनीति में शासकीय, अशासकीय भ्रष्टाचार, जातीयवादी, सांप्रदायिकता, दल बदलू प्रवृत्ति राजकीय नेताओं की हत्या अस्थिर सरकार का प्रचलन होता है। समाज जीवन में सामाजिक परिस्थिति में उच्चवर्ग, मध्यवर्ग, निम्नवर्ग में समाज का आर्थिक विभाजन हुआ है। कुछ सुधारवादी संगठन आगे बढ़ स्वतंत्रता संघर्ष तथा समाज जागृति का काम करते हैं। शिक्षा प्रसार से औद्योगिक विकास के कारण स्वतंत्रता से नारी स्थिति में बदलाव तथा समाज में भौतिक साधनों का आकर्षण बढ़ा है तथा छात्र अपनी माँगों के लिए छात्रांदोलन कर समाज में तनावात्मक वातावरण फैलाते हैं। शिक्षा संस्था में भ्रष्टाचार होकर राजनेता युवाशक्ति को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करते हैं। आर्थिक विषमता से विपन्नता का सामना मध्यवर्ग, निम्नवर्ग को करना पड़ता है। समाज में विवाह के सब प्रकार होकर भी विवाह विच्छेद हो रहे हैं। जिससे कुछ मात्रा में रूढ़ियाँ, रीति रिवाज के बंधन शिथिल होते हैं। समाज में स्त्री-पुरूष संबंध में आत्मीक, सुखमय, दुखमय दांपत्य संबंध तथा वेश्या संबंध के अलग-अलग रूप दिखाई देते हैं। जिसके आधारपर स्त्री-पुरूष संबंध आगे बढ़े हैं। परिवार संस्था से कुछ समस्याएँ उजागर होती हैं। समाज जीवन की सामाजिक समस्याओं में नारी को विधवा समस्या, नारी

शोषण आदि से गुजरना पड़ता है जो एक लज्जास्पद बात है। विवाह की बहु पत्नित्व, अनमेल विवाह, अंतर्जातीय विवाह एवं विवाह विलंब आदि समस्या से विवाह की पवित्रता नष्ट होती जाती है। जिससे परिवार विघटन होकर मानव में आत्मीयता लगाव खत्म होकर अन्याय, गुंड़ा गर्दी, विद्रोह से तनावात्मक वातावरण निर्माण होता है। जिससे संवेदनशील आदमी मनोरूग्ण जैसी भयावह समस्याओं से घिरा रहता है।

परकिय आक्रमण, औद्योगिक विकास के कारण आर्थिक परिस्थिति परिवर्तित होकर अकाल, बाढ़ आर्थिक विषमता से बेरोजगारी, भुखमरी, रिश्वतखोरी समस्याएँ आज भयावह मात्रा में फैली हैं। अर्थाभाव से तंग आकर नारी अपने शरीर का सौदा करने के लिए मजबूर होती है। परिवार विघटन, रिश्तों में दरार, धन लोलुपता जैसी समस्याएँ समाज में छोटी - मोटी समस्याओं के निर्माण का कारण बनती हैं।

धार्मिकता में ईश्वर पर विश्वास, आध्यात्मिकता, मोक्ष, धार्मिक विधि, साधु-महात्मा पर विश्वास, विविध देवी-देवताओं की पूजा, सांप्रदाय, रीति-रिवाज का प्रचलन दिखाई देता है। जिससे कुछ मात्रा में धार्मिक समस्याएँ जैसे अंधश्रद्धा, कर्मकांड़, कु प्रथा, धर्माभिमान, सांप्रदायिकता, जातिभेद, धोकेबाज साधु-महंतों पर विश्वास आदि दिखाई देती हैं। संस्कृति से मनुष्य जीवन जीना सीखता है। समय परिवर्तन से संस्कृति में बदल होते हैं। अर्थप्रधान संस्कृति से नैतिक अनैतिक मार्ग का अवलंब हो कर भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिल रहा है। इस तरह समाज जीवन की परिस्थितियाँ एवं समस्या समाज अध्ययन का महत्त्वपूर्ण मद्दा बनती हैं। आधुनिक जीवन में संयुक्त परिवार आदर्श संस्कृति का प्रतीक है क्योंकि उससे एकता का निर्माण होता है और आज का मनुष्य स्वार्थी बनकर अपने घर के बारे में विचार करता है। लेकिन कुछ लोग देश को ही अपना घर मानते हैं। संस्कृतिप्रिय मनुष्य उत्सव, पर्व, मनोरंजन, खेल के साथ अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाता रहता है। जो सभ्य समाज के लिए आदर्श की बात है। आज नारी शिक्षा प्रसार से आत्मनिर्भर बनी है। साहस और आत्मविश्वास से हर एक विपत्ति का वह सामना करती है। इस तरह नारी की क्षमता आज पग-पग पर दिखाई देती है। नवयुवक महत्त्वाकांक्षी बनकर मेहनत से अपने उद्‌देश्य की पूर्ति करता है। जिससे समाज प्रगति पथ पर पहुँचता है। समाज की समलिंगी आकर्षण यह एक विशेष बात सामने आती है जो एक समस्या बन सकती है। समाज में वेश्या का हमेशा हीन रूप दिखाई देता है लेकिन कुछ वेश्याएँ ऐसी होती हैं जो कला की कदरदान और वात्सल्यमयी होती हैं। इस तरह समाज की अनेक विशेषताएँ समाज को महत्त्व प्राप्त कराती हैं।

संक्षेप में समाज स्वरूप, महत्त्व वर्गीकरण तथा समाज की परिस्थितियाँ, समस्याएँ और विशेषताओं से समाज को अच्छी तरह से समझा जा सकता है।

संदर्भ - संकेत

1. रामचंद्र वर्मा, हिंदी मानक कोश, खंड 5, पृ. 284
2. श्री.नवलजी, नालंदा विशाल शब्द सागर, पृ. 1407
3. सी.पी.भटनागर, क्रायसिस ऑफ इंडियन सोसायटी, पृ. 8

   (Society is a vision of mutual Fellowship and emotional camaraderies)
4. डॉ.विमल शंकर, हिंदी के आंचलिक उपन्यास सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ, पृ. 5
5. पु.ल.भांडारकर, समाजशास्त्रीय सिद्‌धांत, पृ. 20

   प्रा.नी.स.वैदय, (समाज ही सामाजिक संस्थामधील परस्पर संबंधातून साकारित व्यवस्था आहे.)
6. डॉ.मंजुला गुप्ता, समाज और व्यक्ति का द्‌वंद्‌व, पृ. 11
7. वही, पृ. 10
8. वही, पृ. 10
9. डॉ.वीणा गौतम, हिंदी आधुनिक नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना का स्वरूप, पृ. 19
10. डॉ.अर्जुन चव्हाण, राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन, पृ. 73
11. डॉ.मंजुला गुप्ता, समाज और व्यक्ति का द्‌वंद्‌व, पृ. 31
12. डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर, हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन पृ. 178
13. डॅा.राम आहूजा, भारतीय सामाजिक संस्था, पृ. 6
14. वही, पृ. 8
15. डॉ.सुधाकर गोकाककर, मार्क्सवाद और कहानी, पृ. 190
16. डॉ.अर्जुन चव्हाण, राजेंद्र यादव के उपन्यासें में मध्यवर्गीय जीवन, पृ. 36